Central Board of Secondary Education
Shiksha Kendra, 2, Community Centre,
Preet Vihar, Delhi - 110092. India
Tel.: 91.011-22509252-59 Fax : 91-011-22515826
E-mail : cbsedli@nda.vsnl.net.in
Website : www.cbse.nic.in

आओ मिलकर चलें एक सुरक्षित भारत की ओर

आओ मिलकर चलें एक सुरक्षित भारत की ओर भाग-दो

(एक नई दृष्टि)

आपदा प्रबंधन पर कक्षा नौ के विद्यार्थियों के लिए पाठ्य पुस्तक

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
प्रीत विहार, दिल्ली - 110092

आभार

लेखक

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्रभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पादक

- आर0 के0 सिंह, आई.ए.एस.
  संयुक्त सचिव, आपदा प्रबंधन, गृह मंत्रालय भारत सरकार

समीक्षा

- - डा0 कमला मेनन
  प्रधानाचार्या, मीरांबिका स्कूल, नई दिल्ली
- - सुश्री ए. वेंकटचलम
  मदर्स इंटरनेशनल स्कूल, नई दिल्ली

समन्वय कार्य

- सुश्री सुगंध शर्मा, शिक्षा अधिकारी (वाणिज्य)
  सी.बी.एस.ई. दिल्ली

सी.बी.एस.ई. सलाहकार

- - अशोक गांगुली, अध्यक्ष
- - जी. बालासुब्रह्मण्यन्, निदेशक (शैक्षिक)

मूल्य	:	45 रुपए
प्रकाशक	:	सचिव, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, "शिक्षा केन्द्र", 2, सामुदायिक केन्द्र, प्रीत विहार, दिल्ली - 110092
रुपरेखा विन्यास तथा निदर्शन	:	मल्टी ग्राफिक्स,5745/81 रैगड़पुरा, करोल बाग, नई दिल्ली - 110005 फोन : 25783846
मुद्रक	:	अभिनव प्रिंटर्स, W Z-48 शकरपुर गांव, शकूर बस्ती, दिल्ली - 110034 फोन : 27108340, 27151800, 27157052, 27190658, फैक्स 27108686

विषय सूची

			पृष्ठ
प्राक्कथन			(i)
विद्यार्थियों के लिए			(iii)
भाग - एक		**आपदा प्रबंधन से परिचय**	
अध्याय एक	:	आपदा प्रबंधक बनना महत्वपूर्ण शब्दों की समझ	1
अध्याय दो	:	आपदा प्रबंधन के घटक	7
भाग दो	**-**	**आपदा जोखिम को कम करना**	
अध्याय तीन	:	आपदा जोखिम प्रबंधन परिचय आपदा के दुष्प्रभावों को कम करना समझना	11
अध्याय चार	:	विशिष्ट संकट तथा दुष्प्रभावों को कम करना	17
भाग तीन	**:**	**कुछ सामान्य मानव-जनित आपदाएं**	
अध्याय पांच	:	सामान्य मानव-जनित आपदाओं की रोकथाम	31
भाग चार	**:**	**समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन**	
अध्याय छ	:	समुदाय-आधारित आपदा प्रबंधन	43
अध्याय सात	:	आपदा प्रबंध के लिए स्कूल के स्तर पर योजना तैयार करना	52

प्राक्कथन

विद्यालय हमारे सामाजिक जीवन के एक महत्वपूर्ण अंग हैं । विद्यालय न केवल देश की भावी पीढ़ी का निर्माण करते हैं बल्कि बच्चों को नैतिक मूल्य प्रदान करके प्रत्येक समाज की महत्वपूर्ण संस्कृतियों की शिक्षा देने में भी उनकी सक्रिय भूमिका रहती है । अतः बच्चे अभिभावकों (माता-पिता) तथा स्वयं समाज के लिए संदेश वाहक की भूमिका अदा कर सकते हैं । इसी संदर्भ में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने 2003 में कक्षा 8 की प्रमुख पाठ्यचर्या के अंग के रूप में आपदा प्रबंध विषय शुरू किया था । इसके पीछे उद्देश्य यह था कि जिन प्राकृतिक और मानव-जनित आपदाओं के कारण प्रतिवर्ष अनेक जानें और आजीविकाएं और सम्पत्तियां नष्ट हो जाती हैं उनकी रोकथाम, उनके दुष्प्रभावों को कम करने और उनके भयावह तथा विध्वंसक प्रभावों से निबटने के लिए पहले से तैयारी करने का वातावरण बनाया जाए ।

आठवीं कक्षा में हमने आम आपदाओं से अपना बचाव करने के लिए सामान्य बातों से परिचित कराया है (आपदा की पूर्व तैयारी) । आपदा के दुष्प्रभावों को कम करने के लिए इस पुस्तक में उन कार्यों का उल्लेख किया गया है जिनके कारण हमारे ऊपर पड़ने वाले आपदा के दुष्प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है । इसमें समाज का भी महत्व बताया गया है जो सबसे पहले जवाबी कार्रवाई करता है । इसमें आपदा प्रबंधक का भी महत्व बताया गया है जिसके बिना आपदा प्रबंधन की योजना तैयार करने की प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकी ।

भारत एक अत्यधिक आपदा-संभावित देश है । समुदायों में जागरूकता उत्पन्न करने तथा उन तक अनिवार्य सूचना पहुँचाने में शिक्षक तथा विद्यार्थी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं । यह पता करना कोई असाधारण बात नहीं है कि जो समुदाय हाल ही में भीषण आपदा का सामना कर चुका है वहां कोई स्कूल अध्यापक या छात्र एक आदर्श आपदा-प्रबंधक बन गया हो । स्थानीय आपदा असुरक्षाओं के विषय में जागरूकता पैदा करने, उनसे किस प्रकार निबटा जाए तथा समुदाय पर आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए एक दल के रूप में काम करने की दिशा में उन्होंने प्रशंसनीय कार्य किया है । निःसन्देह ये ऐसे उदाहरण हैं जो उस दृढ़ सामाजिक उत्तरदायित्व की पुनरावृत्ति करते हैं जिन्हें विद्यालय जैसी संस्था वहन करती है ।

जब भी कोई आपदा आती है तो प्रायः विद्यालय ही पीड़ितों के लिए एक अस्थायी आश्रय बन जाता है । आरंभ में जवाबी कार्रवाई के रूप में खोज और बचाव कार्य करने या प्रारंभिक चिकित्सा के लिए अध्यापकों व विद्यार्थियों की आवश्यकता पड़ती है। आपदा से जिन्हें भारी क्षति हुई है, उन्हें मानसिक आघात से उबारने के लिए वे सर्वोत्तम परामर्शदाता सिद्ध हो सकते हैं । अतएव विद्यालयों को आपदा के समय जवाबी कार्रवाई के कुछ पहलुओं में व्यावहारिक प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है । हम इस लक्ष्य को सरकार तथा नागरिक सुरक्षा, अग्नि शमन सेवाओं, जिला प्रशासन तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के स्वयंसेवक तथा रैडक्रास आदि जैसी एजेंसियों के सक्रिय सहयोग से प्राप्त कर सकेंगे । गत वर्ष हमारे अभिविन्यास कार्यक्रमों के दौरान हमने आपदा प्रबंधन के कार्य में शामिल विभिन्न एजेंसियों द्वारा ऐसी प्रदर्शनियों का आयोजन करवाया है जो अध्यापकों के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई हैं ।

अब समय आ गया है कि हम यह सोचना बंद कर दें कि आपदाएं दूसरों पर ही आती हैं, हम पर नहीं । आपदा प्रबंधन की आवश्यकता के लिए हमें किसी अन्य भीषण चक्रवात (उड़ीसा 1999) भुज भूकम्प (गुजरात 2001) या भोपाल गैस त्रासदी (1984) की प्रतीक्षा नहीं करनी है । याद रखिए भारत का साठ प्रतिशत से अधिक भू-भाग भूकम्प-संभावित है, बारह प्रतिशत बाढ़-संभावित, आठ प्रतिशत चक्रवात-संभावित तथा सत्तर प्रतिशत से अधिक कृषियोग्य भूमि अकाल-संभावित है । हमारे यहां बहुत बड़ी संख्या में ऐसे रासायनिक उद्योग धन्धे हैं जो खतरनाक सामग्री उत्पन्न कर रहे हैं । भारत में आग से भी सर्वाधिक क्षति होती है । हमारा प्रयास होगा कि हम पूरे देश में आपदा निवारण का वातावरण बनाने में भारत सरकार के साथ सहयोग करें । हम यह मानकर चलते हैं कि इस प्रयोजन के लिए समुदायों के लिए आपदाओं की संभावनाएं कम कराने के कार्य में सहयोग देने के लिए देश के सभी अध्यापकों को प्रेरित करें और वे पूरे उत्साह के साथ इसमें भाग लें ।

बच्चे हमारा भविष्य हैं । आपदाओं से उनकी सुरक्षा होनी चाहिए । उनकी सुरक्षा के लिए आपदा-रोधी विद्यालय एवं घर का निर्माण करना हमारा नैतिक दायित्व है ।

पाठ्यक्रम सामग्री और अनुकूलन कार्यक्रमों की तैयारी में सहयोग एवं मार्गदर्शन करने के लिए मैं गृह मंत्रालय को धन्यवाद देना चाहूँगा । मैं यूएनडीपी टीम का भी हृदय से आभारी हूं जिन्होंने इस कार्य में, जब भी आवश्यकता पड़ी, अपना पूरा सहयोग दिया और जिनकी सहायता एवं सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं था ।

सबसे बढ़कर मैं सम्पूर्ण देश के उन सैकड़ों शिक्षकों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने उदार दिल से एवं पूरी रूचि लेकर इस नए पाठ्यक्रम का स्वागत किया है और न केवल विद्यालय में अपितु उससे बाहर भी अपदा निवारण का वातावरण बनाने के लिए कठिन परिश्रम किया है ।

अंत में मैं श्री जी बाला सुब्रहम्ण्यम (निदेशक, शैक्षणिक) तथा उनके सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से इस पाठ्य पुस्तक को तैयार किया।

अशोक गांगुली
अध्यक्ष
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

विद्यार्थियों के लिए

कक्षा 8 में हमने **"आओ मिलकर चलें एक सुरक्षित भारत की ओर-आपदा प्रबंधन एक परिचय कक्षा आठ के विद्यार्थियों के लिए"** पुस्तक पढ़ी । हमने सीखा कि आपदा की पूर्व तैयारी से तात्पर्य उन क्रियाकलापों से है जो आपदा के दुष्प्रभावों से हमारा बचाव करने में तथा आपदा के समय प्रभावी रूप से तथा तेजी से जवाबी कार्रवाई करने में सहायता करते हैं । अब आप निम्नलिखित बातों को समझ सकेंगे -

- *आपदा तथा संकट के बीच अन्तर*
- *विभिन्न प्रकार की आपदाएं*
- *आपदाओं का सामना करने के लिए पहले से तैयार रहने का महत्व*
- *आपदा असुरक्षाओं के प्रति जागरूकता की आवश्यकता का महत्व तथा जागरूकता की भावना पैदा करने में शिक्षक एवं विद्यार्थियों की भूमिका*
- *भूकम्प, चक्रवात, बाढ़, सूखा तथा मानव जनित-आपदाओं की स्थिति में अपनी रक्षा हेतु **क्या करें क्या न करें** की समझ*

(अपनी स्मृति ताजा करने के लिए आठवीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक अवश्य पढ़ें .... अथवा कक्षा में उपरोक्त के बारे में संक्षिप्त रूप से चर्चा करें)

कक्षा नौ में

अब हम यह सीखेंगे कि आपदाओं के **दुष्प्रभावों को कैसे कम करें** जिससे कि उनका प्रभाव समुदायों पर कम हो तथा संकट को आपदा बनने की संभावना से **रोका जा सके** ।

हम सीखेंगे कि समुदाय एक दल के रूप में कैसे काम कर सकते हैं और सक्षम आपदा-प्रबंधक बन सकते हैं **(समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन)**। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आपदा की स्थिति में जवाबी कार्रवाई करने वालों में समुदाय सबसे आगे आता है ।

आगे हमें यह भी समझने की आवश्यकता है कि हम विद्यालयों के लिए **आपदा प्रबंधन योजनाएं** कैसे तैयार करें तथा जवाबी कार्रवाई के कौशल के लिए स्वंय को कैसे प्रशिक्षित करें ताकि संकट के समय हम अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकें ।

अंततः विद्यार्थी तथा अध्यापक के रूप में हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम अपने परिवार तथा पडोसियों को **सजग** एवं **शिक्षित करें** ताकि हम सब मिलकर एक सुरक्षित भारत का निर्माण कर सकें ।